॥ ओ३म् ॥

# प्रभु से विनय

हे प्रभु! हे मेरे जीवन के सञ्चालक! तू आकर हमें तपस्वी बना। हमें योगी बना। प्रभु! अब मुझे किसी ने संकेत कराया है कि तू तपस्वी बन। हे प्रभु! मेरे जीवन में, मेरे हृदय में जो नाना प्रकार की त्रुटियाँ हैं, उन त्रुटियों को मुझ से दूर करो, मैं त्रुटिदायक नहीं बनना चाहता। प्रभु! मेरा जीवन आपकी कृति में हो, मेरा जो जीवन है, मेरी जो सङ्कलन धारा है, वह आपकी कृति में होनी चाहिए।

सुन्दर यज्ञ करने को देव पूजा कहा जाता है, जिसमें देवताओं का आदर होता है, देवताओं के लिए हवि प्रदान करते हैं। यजमान की अवस्था सौ वर्षों की होनी चाहिए। हे परमात्मन्! आप अधिक से अधिक अवस्था दीजिए, जिससे विधाता! हमारा जीवन संसार में पवित्र बनता जाए और हम अपनी मानसिक इन्द्रियों को सुन्दर करते चले जाएँ। हम परमात्मा की कृति को, हम उस परमात्मा को प्रातः और सायँकाल धन्यवाद करते चले जाएँ, जिससे हृदय में मानसिक बल आता चला जाए और **जिस मानव के हृदय में मानसिक बल होता है वह किसी भी काल में रुग्ण नहीं होता, उसको किसी प्रकार का भी दुःखद नहीं होता।** वह सदैव एक रस बना रहता है। निर्द्वन्द्व बना रहता है, ब्रह्मचर्यता को ले करके चलता है, अग्नि को ले करके चलता है, प्रकाश को ले करके चलता है और उस प्रकाश में वह प्राणी रहता है, जिसके पश्चात् अन्धकार नष्ट होता चला जाता है।

**पूज्यपाद-गुरुदेव**

अंक : 580 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 655
वर्ष : 49 44 समग्र वर्ष : 56

# अनुक्रम


| क्रम संख्या | विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. प्रभु से विनय | पूज्यपाद-गुरुदेव | 3 |
| 2. अनुक्रम | | 4 |
| 3. महात्मा वशिष्ठ मुनि सोमकेतु ऋषि सम्वाद | पूज्यपाद-गुरुदेव | 5-26 |
| 4. महर्षि सोमकेतु कौटल्य और राजा सगर का दान पर सम्वाद | पूज्यपाद-गुरुदेव | 27-29 |
| 5. ऋषियों के उद्‌गार | | 30 |
| 6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि | | 31-42 |


## *श्रावणी पर्व

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा और पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की पावमानी प्रेरणा से रक्षाबन्धन के शुभावसर पर दिनाँक 22-8-2021, दिन रविवार को प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह, बरनावा के प्राङ्गण में सामवेद ब्रह्म-पारायण महायज्ञ का आयोजन श्री गाँधी धाम समिति द्वारा आयोजित किया जा रहा है। आप सभी इस यज्ञ में अपने परिवार, सगे-सम्बन्धियों एवम् मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

**श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)**

*** याग का आयोजन सरकार के नियमों के अन्तर्गत किया जाएगा।**

॥ ओ३म् ॥

# महात्मा वशिष्ठ मुनि सोमकेतु ऋषि सम्वाद

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जा रहा था। क्योंकि जो ध्वनि में रत्त रहने वाला है, क्योंकि यह संसार में जितनी भी ध्वनियाँ हो रही हैं चाहे वे प्रत्यक्ष रूप में हों, चाहे वे परोक्ष रूप में हों। परन्तु वे जो ध्वनि पर ध्वनि ध्वनित हो रही है वह एक बड़ी विचित्र-सी प्रतीत होती है क्योंकि उन ध्वनियों के माध्यम से ही मानव अपनी मानवीयता को जानता है। उसी ध्वनि को ले करके वैज्ञानिकजन् मानो ध्वनियों के रूपों को ले करके उससे नाना प्रकार के प्रायः यन्त्रों का निर्माण करते रहे हैं। तो विचार क्या? हमें उस ध्वनि को जानना चाहिए जो मानो एक ध्वनि ध्वनित हो रही है। और मानव उसके ऊपर विचार-विनिमय कर रहा है। आज कोई नवीन वाक्य नहीं है परम्परागतों से ही मानव इसके ऊपर अनुसन्धान करता रहा है और विचारता रहा है कि जो अन्तरिक्ष में ध्वनियाँ हो रही हैं अथवा कुछ लोकों में ध्वनियाँ हो रही हैं हमें उन ध्वनियों को जानना है। मानो देखो, विज्ञान परम्परागतों से ये विचारता रहा है क्या जो हमारे पूर्वजों के शब्द हैं और वे शब्द अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो रहे हैं। वे अन्तरिक्ष में हैं तो उन शब्दों, को ध्वनियों को जाना जाए जिससे हम ये जान सकें क्या वह प्रभु का ज्ञान है अथवा वेद मन्त्रः है वो यथार्थ कह रहा है या मिथ्या कह रहा है तो उससे उसका भान होता है।

विचार क्या मुनिवरो! देखो, वह जो ध्वनि अपने में ध्वनित हो रही है, मानो उसे जानना है। एक वैज्ञानिक अपने यन्त्रों का समन्वय करके उस ध्वनि को जान रहा है। एक भौतिक विज्ञानवेत्ता न रह करके आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करता है और आध्यात्मिकवाद में ये चिन्तन का उसका एक विषय बन गया है। क्या मैं उस ध्वनि में ध्वनित हो जाऊँ, जिस ध्वनि में ध्वनित हो करके मानव उस ध्वनि को जान सके कि उस ध्वनि में मानो वह ध्वनित होना चाहता है। मेरे पुत्रो! देखो, इस आभा में लगा हुआ प्राणी मानो अपने लघु मस्तिष्क में प्रवेश कर जाता है और भौतिक विज्ञानवेत्ता भौतिकवाद में रत्त हो जाता है और भौतिकवाद के उस अणु-परमाणु में रत्त हो करके अपने को ध्वनित बनाने लगता है।

## प्रकाश ही वेद है

मुझे वो काल स्मरण आता रहता है जिस काल में ऋषि-मुनि एकत्रित हो करके और अपनी-अपनी ध्वनियों को अपने में ही अनुभव करते रहे। पुरातन काल का एक महापुरुष है उस ध्वनि को, उसकी एक ध्वनि है और वह ध्वनि में ध्वनित होता हुआ अन्तरिक्ष/द्यौ लोक में चला गया है। परन्तु जब भौतिक विज्ञानवेत्ता किसी भी काल में एक परमाणु के ऊपर अन्वेषण करते तो वेद ध्वनि, उसे उस ध्वनि में वह ध्वनित हो करके उसे जानने लगता है। आज मुनिवरो! देखो, मैं विशेष चर्चाओं में तो तुम्हें नहीं ले जाऊँगा केवल ये विचार-विनिमय करना है कि वो जो ध्वनि है वो मानव की, मानव के श्रोत्रों में प्रवेश करके वह दिशा के स्वरूप को धारण कर लेता है परन्तु बाह्य जगत आन्तरिक जगत का, दोनों का वहाँ समन्वय हो गया है। दोनों का समन्वय हो करके बेटा! ध्वनि का एक विश्वसनीय विचित्र एक रूप उसके समीप आ जाता है, वह रूप वाला शब्द बन जाता है। तो विचार क्या मुनिवरो! देखो, मैं तुम्हें वेद मन्त्रों की कुछ आभा में ले जाना चाह रहा था। आज बेटा! हम तुम्हें ये निर्णय दे रहे थे कि वेद हमें क्या कहता है, वेद हमें किस विज्ञान के मार्ग पर ले जाता है। जब वेद के ऊपर

मानव अन्वेषण अथवा अनुसन्धान करता है तो बेटा! वेद एक पोथियों के रूप में नहीं मानो प्रकाश के रूप में दृष्टिपात आने लगता है। और वह प्रकाश जिसके प्रकाश में बेटा! संसार का प्राणी मात्र तपता है। एक मानव ही नहीं बेटा! प्राणी मात्र तपता रहता है परन्तु एक पृथ्वी मण्डल ही नहीं नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर उसी के प्रकाश में तपते रहते हैं। तो इसलिए विचार आता है क्या वह जो वेद रूपी प्रकाश है उसको जानने की उत्कट इच्छा रहती है। बेटा! मानव का बाह्य जगत एक प्रकाश में बना हुआ है। रात्रि से मानव जागरुक हुआ तो सूर्य का प्रकाश प्राप्त हो गया। कहीं-कहीं बेटा! मध्य रात्रि में जागरुक होता है, तो वहाँ चन्द्रमा का प्रकाश बन करके आता है। मानो ये प्रकाश जो नाना प्रकार के रूपों में विद्यमान है—कहीं अग्नि में विद्यमान है, कहीं तारा मण्डलों की छटा के मानो कृतियों में विद्यमान है। तो मेरे प्यारे! वो जो प्रकाश है, वो वेद है। वह प्रकाश कहाँ से प्राप्त हुआ है, वह परमपिता परमात्मा की धरोहर है। जिस भी मानव को अपने में अध्ययनशील बन करके विज्ञान को प्राप्त करना है, उस प्रकाश को अपने में प्रकाशित करना है जिस प्रकाश के द्वारा मानव अपनी प्रवृत्तियों को जान करके योग के माध्यम से अन्तरिक्ष में बेटा! द्यौ लोक में वो आत्माओं से वार्त्ता प्रकट करते हैं।

## पुनरुक्तियाँ ही जीवन

विचार बेटा! मैं क्या देने जा रहा था? मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ वशिष्ठ मुनि महाराज और सोमकेतु की चर्चा हो रही थी। इससे पूर्व काल में भी मैंने कई काल में तुम्हें वर्णन करते हुए कहा था परन्तु यहाँ चन्द्रमा और सूर्य और गन्धर्व की वार्त्ता मैंने कुछ समाप्त की थी। क्योंकि मैं व्याख्याता नहीं हूँ केवल कुछ सूक्ष्म सा परिचय देता रहता हूँ और वह परिचय क्या है? जो बेटा! आज मैं तम्हें पुनरुक्तियों में प्रविष्ट, प्रवर्त करा रहा हूँ। **मानो पुनरुक्तियों में एक आभा निहित रहती है, संसार का प्रत्येक पदार्थ पुनरुक्तियों में रत्त हो रहा है।** मानो परमाणु अपनी

आभा में रत्त हो करके पुनरुक्तियों को धारण कर रहा है। प्रत्येक मानव का जीवन एक परिवर्तन मानो परिवर्तनशील कहलाता है और मुनिवरो! देखो वे जो पुनरुक्तियाँ वह उसका जीवन बन करके रहती हैं। तो इसलिए प्रत्येक मानव को विचारना है कि हम पुनरुक्ति के क्षेत्र में, सृष्टि का प्रादुर्भाव हुआ मानो सृष्टि की प्रलय हो गयी और पुनरुक्ति बेटा! पुनः सृष्टि निर्माण हो गया। आत्मा मानो चित्त के संस्कारों को ले करके शरीर को त्याग रहा है, प्रणयम् परन्तु उसी के संस्कारों के बन्धन से माता के गर्भ में पुनः से प्रवेश कर रहा है। तो ये संसार बेटा! पुनरुक्तियों में निहित हो रहा है। राजा बना है, पुनः राजा बन गया है। ऋषि बना है, पुनः ऋषि बन जाता है। परन्तु ये जो पुनरुक्तियाँ हैं यही तो मानव को अग्रणीय बनाती हैं। जैसे साहित्य है और वो साहित्य मानो देखो, पुनरुक्तियों में निहित हो गया। हमने वो गाथाएँ पुरातन काल में भी श्रवण कीं, आज भी वर्तमान में भी उन गाथाओं को अपने में अध्ययन कर रहे हैं परन्तु उसका जो आध्यात्मिक रूप है वह आध्यात्मिकवाद में प्रवेश कर जाता है और जो भौतिक विज्ञान है वह भौतिकवाद में प्रवेश कर जाता है। परन्तु यही चर्चा हो रही थी इन्द्र की विवेचनाएँ, वह इन्द्र मानो पुनरुक्तियों में विद्यमान है।

वह जो इन्द्र है जो संसार का अधिपति है। मैंने तुम्हें कई कालों में प्रगट किया उनकी तपस्या के बल से बलवती बन करके ही तो देखो राजा होने से अभिमान की भी मात्रा आ जाती है। मानो वह जो परमपिता परमात्मा इन्द्र है जो संसार का अधिपति है, वह जो शरीरों में भासने वाला आत्मा उसका नामोकरण भी मानो यहाँ सवम् ब्रह्म वाचक प्रव्हो लोकाम्। बेटा! ये अपनी आभा में इन्द्र बन करके रहता है। इन्द्र ही मुनिवरो! देखो, मानव के कर्मफल और मानव की द्वितीय रूपों में प्रवृत्ति परिवर्तन हो करके यहाँ नाना रूपों में, अति रूपों में बेटा! इस प्रकृति का स्वभाव बना रहता है। परन्तु जब ये विचारा जाता है क्या संसार के वैज्ञानिकों ने पुरातन काल में जब इन्द्र की विवेचना करने लगे थे तो इन्द्र मानो देखो उसे परमपिता

परमात्मा सिद्ध हुआ। जब जड़वत् रूपों में उसने अध्ययन करना प्रारम्भ किया तो बेटा! उन वैज्ञानिकों ने इन्द्र की प्रतिभा को जान करके मानो देखो उन्होंने एक विश्वसनीय रूप बनाया और देखो उन धातुओं को जानने का प्रयास किया जिन धातुओं में प्रवेश हो करके नाना प्रकार के वैज्ञानिक यन्त्रों का निर्माण किया।

मानो देखो, सृष्टि के पिता ने जब संसार का सृजन किया तो मानो ये वेद का प्रकाश एक मानो देखो मानव को एक सौगात के रूप में परणित किया, एक धरोहर के रूप में परणित कर दिया। वेदों का ज्ञान आते ही मानव प्रकाश और बाह्य जगत और व्यवहार में मानो देखो, ये कुशल बन गया। कुशल बनते हुए मानो एक समय वे साधना के रूप में जब विद्यमान हुआ तो साधना में बेटा! जब मैं श्वास लेता हूँ, तेरा तो प्रत्येक जो परमाणु है वायुमण्डल को दूषित बना रहा है।

परन्तु संसार के वैज्ञानिकों ने इस रूप में भी प्रवेश किया कि मानो देखो खनिज को जानने का प्रयास किया। जिस भी काल में बेटा! पृथ्वी माता वसुन्धरा के गर्भ में वैज्ञानिक ने बेटा! प्रवेश किया है उसी काल में देखो संसार में अन्धकार छा गया है। जिस काल में वैज्ञानिकों ने सूर्य की किरणों के ऊपर अनुसन्धान किया और चन्द्रमा की पुट लगा करके वायु का अवधान करते हुए यन्त्रों का निर्माण किया है तो मानो उस-उस काल में, संसार में प्रकाश की उपलब्धि हुई है। क्योंकि प्रकाश की उपलब्धि उस काल में होती है जबकि मानव उस परमपिता परमात्मा के उस मानो बिखरे परमाणुओं को अपने में एकत्रित करने का प्रयास करता है। और वह प्रकाश करता हुआ मानो देखो, एक-एक अणु को प्रकाश में रत्त करता हुआ वह यन्त्रों में यन्त्रित हो जाता है। लघु में लघु कृतियों को प्राप्त करने लगता है। बेटा! मैं दूरी न चला जाऊँ विचार केवल ये चल रहा है कि मानव अपनी धाराओं में रत्त होता हुआ अपने जीवन के उस रहस्यतम रहस्यों को जानता हुआ ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ता रहे। जिस काल में

वैज्ञानिकों ने यन्त्र मानो सूर्य की ऊर्ज्वा से गति करने वाले यन्त्रों का निर्माण किया है तो उस काल में अन्धकार और वायुमण्डल में दूषितपन नहीं आया है। परन्तु ये काल एक राजा रावण के राष्ट्र में भी ये काल आया है जो भौतिक विज्ञानिकों का इतना ऊर्ध्वा में परन्तु जब भी वायुमण्डल दूषित हुआ उसी काल में वेदों की जो एक सौगात परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में प्रदान कर दी थी परन्तु उसका अध्ययन करना प्रारम्भ किया। उसने जब अध्ययन की शैली में मानो विज्ञान के वाङ्मय में ले करके और वेद के विज्ञान को विचार करके मानो जब वह गति करने लगा तो मुनिवरो! देखो, उन्होंने अजामेध, अश्वमेध, अग्निष्टोम यागों का चलन किया। परन्तु जब उन यागों में वह मानव परणित होने लगा तो विचारा कि गौ घ्रताम् भवि ब्रह्म वाचाः। मानो घृत के द्वारा अग्नि में जब घृत को प्रवेश किया तो अग्नि ने जब उसका विभाजन किया तो एक-एक परमाणु मुनिवरो! देखो एक-एक सहस्त्र परमाणु अशुद्धियों को निगलता चला गया।

## इन्द्र नाम की अग्नि

जब वैज्ञानिकों ने ये विचारा ये तो एक मानो प्रभु की अनुपम एक धरोहर है जिसके ऊपर हम देवता ब्रहे इन्द्र रूपी अग्नि का हम पूजन करें। वह जो इन्द्र रूपी अग्नि है उसको विचारना है उसका उसको चिन्तन करना है। वह जो मानो इन्द्र रूपी अग्नि है जो **वृत्रासुर** को भी छिन्न-भिन्न कर देती है जो मानो देखो, वह **बकासुर** को भी छिन्न-भिन्न कर देती है। हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूपों में मानो देखो, बकासुर और वृत्रासुर दोनों दैत्यों का वर्णन आता है। मुनिवरो! देखो, बकासुर तो वह कहलाता है जो गम्भीर वासने में भ्रमण करता है और वृत्रासुर उसे कहते हैं जो यागों की प्रतिभा को ले करके अन्तरिक्ष में रत्त रहता है। मानो देखो, अग्नि जब उसका विभाजन करती हुई और मानो देखो जब वे इन्द्र रूपी आभा को उसको मानो देखो, छिन्न-भिन्न करती है तो वृष्टि के रूप में परणित हो जाता है। तो परिणाम ये हुआ क्या मानो वृत्रासुर कोई राक्षस नहीं बना

परन्तु वृत्रासुर यहाँ मेघों का वर्णन आया है। वह जो मेघों में मानो जलाशय विद्यमान था उसी का वृष्टि रूप बन गया। वृष्टि रूप बन करके पृथ्वी नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन गयी, नाना प्रकार की आभा में रत्त हो गयी। तो विचार-विनिमय क्या? मुनिवरो! मैं बहुत दूरी चला गया हूँ। वेद का मन्त्र यह कहता है कि वैज्ञानिकों को चाहिए क्या वह बिखरे हुए परमाणुओं को जो तिलाञ्जलि दी, जिन परमाणुओं को अन्तरात्मा ने या प्राण सखा ने उसी परमाणु को पुनः से अन्तरिक्ष में ला करके और उसको प्रयोग में लाना प्रारम्भ किया परन्तु ये ही जीवन के लिए अभिशाप बन गया है। ये ही तो जीवन के लिए अभिशाप है। परन्तु आज मैं बेटा! उस विज्ञान में नहीं जाना चाहता हूँ विचार केवल ये कि हम ज्ञान नाग भूतम् ब्रह्म वाचो देवाः। ज्ञान आत्मा के अनुकूल अपने अनाहद को पान करना चाहते हैं परन्तु वहीं वायुमण्डल का वह विज्ञानमयी धारा वायुमण्डल में बिखरी हुई जब प्रत्येक श्वास की धारा में जब आन्तरिक जगत को प्रवाहित करती है तो जब प्रवाहित हो जाता है तो मानव आश्चर्यचकित हो जाता है।

बेटा! मैं आज विशेषता में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। मैं तुम्हें उसी वाङ्मय में ले जाना चाहता हूँ जहाँ मैं इन्द्र की चर्चा कर रहा था कि वह जो इन्द्र है वह इन्द्र हमारा सखा है। जहाँ इन्द्र के मानो पर्यायवाची शब्द यहाँ विद्युत का नाम इन्द्र माना गया है। मेरे प्यारे! वही तो इन्द्र है जब यजमान स्वाहा देता है तो मानो जिसकी ध्वनि को ले करके द्यौ मण्डल में प्रवेश करा देता है, वह द्यौ में प्रवेश कर जाता है। यह वही इन्द्र नाम की अग्नि है मानो देखो, जो मानव के शब्दों को ले करके अन्तरिक्ष में निहित करा देती है। वही शब्द मानो देखो क्रियाकलाप और चित्रों के साथ में मुनिवरो! देखो, अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत क्या वह द्यौ को प्रवेश कर जाते हैं। कुछ अन्तरिक्ष लोक में रत्त हो जाते हैं, कुछ द्यौ लोक में चले जाते हैं। परन्तु जहाँ मैं, इन वाक्यों के ऊपर विचार-विनिमय हम करें परन्तु ये विचारा जाए क्या वह जो ध्वनियाँ हैं मानो आत्मतत्त्व की आभा में रत्त होने वाला शब्द है वह

आभायित होता हुआ मानव को प्राप्त होना है। तो मुनिवरो! देखो वह जो अग्नि, इन्द्र रूपी जो अग्नि है ये ही तो शब्दों के कलाप में निर्णय करा देती है। मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में निर्णय कराया था।

## महात्मा भुञ्जु मुनि महाराज द्वारा इन्द्र नाम की अग्नि का पूजन

बेटा! महात्मा भुञ्जु मुनि महाराज एक समय अपने आश्रम में विद्यमान थे। जब महात्मा भुञ्जु के द्वारा मेरे प्यारे! कहीं से श्वेताश्वेतर आ पहुँचे और महर्षि वैशम्पायन जी भी आ गए। परन्तु देखो जब उनका विचार-विनिमय हुआ तो मुनिवरो! देखो, जब उनका विचार-विनिमय यह होने जा रहा था क्या हम अपने विज्ञान, अपने ज्ञान और अपने देखो, यौगिक धाराओं में हम रत्त रहना चाहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ये विचार ऋषि-मुनियों के मध्य में आया तो मानो उन्होंने समाधिष्ठ होने लगे वैसे पदार्थों को पान करके मेरे प्यारे! महर्षि वैशम्पायन ने तो शीतली प्राणायाम करके वायुमण्डल से परमाणुवाद को ले करके देखो, अपने उदर की पूर्ति की। परन्तु ले करके जब उन्हें कोई मार्ग प्राप्त नहीं हुआ तो अपने पितरों के दर्शन होने लगे, वह जो पितर अन्तरिक्ष में विद्यमान थे। तो मानो देखो इन्द्र रूपी अग्नि को जानने का उन्होंने प्रयास किया। मेरे प्यारे! महात्मा भुञ्जु ने जब यह विचारा क्या ये तो वास्तव में देखो, इस प्रकार की कृति है परन्तु वह ऋषि वैशम्पायन से बोले महाराज! मैं यह जानना चाहता हूँ कि आधुनिक जगत में इस प्रकार का कोई वैज्ञानिक है जो इन मानो मेरे पितरों का मुझे दर्शन करा दे, जिनको मैं स्वप्नवत् में दृष्टिपात कर रहा हूँ। मेरे पुत्रो! देखो, जब उन्होंने ऐसा वाक्य प्रगट किया तो महात्मा वैशम्पायन ने विचारते-विचारते ये विचारा कि आज हम तीनों ही विद्यमान हो करके इसके ऊपर क्यों न चिन्तन करें। उन्होंने कहा किया जाए। तो मेरे प्यारे! चिन्तन करने लगे, गम्भीर मुद्रा में परणित हो गए, समाधिष्ठ में प्रवेश होने लगे परन्तु देखो बहुत समय हो गया। मुनिवरो! देखो कौन महर्षि शिकामकेतु मानो देखो, उद्दालक गोत्रीय बेटा! भ्रमण करते उनके द्वार पर

आए। जब उनके द्वार पर आए महात्मा भुञ्जु ने उनके चरणों की वन्दना की और वह विद्यमान हो गए। उन्होंने कहा भगवन्! हमारे अन्तःकरण में अनुभव जो हो रहा है उसको बाह्य जगत में कैसे लाया जाए? तो मुनिवरो! देखो, शिकामकेतु ने कहा याग करो, अग्नि रूपी इन्द्र की पूजा करो। मानो देखो, उसमें तुम्हें ये भान होगा। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने याग प्रारम्भ किया। भयङ्कर वनों से साकल्य लाते और साकल्य लाकर इन्द्र रूपी अग्नि को प्रदीप्त करके मानो उसमें दाह कृतियों की समिधाओं को ले करके बेटा! वह याग कर्म करने लगे। जब क्रियाकलाप करने लगे उन्हें बारह माह हो गए इस प्रकार याग करते हुए उन्हें मानो कुछ प्राप्त नहीं हुआ। तो शिकामकेतु उनकी पत्नी पुनः से वहाँ पहुँचे। महात्मा भुञ्जु ने कहा महाराज! आपने हमें युक्ति प्रदान की थी एक वर्ष हो गया है। आपने एक वर्ष की हमें आज्ञा दी थी वह हमारा एक वर्ष हो गया है प्रभु! अब हम क्या करें? उन्होंने कहा इन्द्र नाम की अग्नि को तुम मानो प्रगट करो और इन्द्र नाम की अग्नि को प्रगट करके वह ही तुम्हें इसका उत्तर दे सकेगी। मेरे प्यारे! उन्होंने उस अग्नि को चेताने का प्रयास किया। वह जो इन्द्र नाम की अग्नि जब प्रदीप्त हो गयी, प्रदीप्त होने के पश्चात् मेरे प्यारे! देखो, उसमें चित्रावली आभा में निहित, मानो एक रुद्र रूपों में अपने को धारण करने लगी। उन्होंने बेटा! देखो महात्मा शिकामकेतु ने कहा तुम मेरे यहाँ से एक यन्त्र है उसे ले आओ और उस यन्त्र में मानो देखो, इसका प्रशिक्षण होता रहेगा। तो मेरे प्यारे! देखो शिकामकेतु ऋषि महाराज के यहाँ से वह मानो देखो यन्त्र को लाया गया और याग उनका अग्नि का वो ही अग्नि देखो, इन्द्र नाम की अग्नि का उन्होंने ष्टोम किया और ष्टोम करके बेटा! जब याग होने लगा मानो देखो, उसी यन्त्र में वो चित्रों को दृष्टिपात कर रहे हैं। अपने चित्र दृष्टिपात हुए तो अपने पूर्वजों के (चित्र) आने लगे। उनमें मानो छठे पिता महापिताओं के आने लगे जो संसार में नहीं थे उनके चित्र भी आने लगे। मेरे प्यारे! देखो, सत्तनम् ब्रह्मा इन्द्रो सङ्कला वृत्ति देवाः वे सङ्कल्प मात्र से ही मुनिवरो! देखो, चित्रों का दर्शन होने लगा। तो मुनिवरो! देखो महात्मा भुञ्जु ने अपने मानो

देखो, अपने इक्कीसवें महापिता के उस यन्त्र में दर्शन करने लगे और उन्होंने देखो उसका गान ध्वनियों में ध्वनित हो गया और यह अपने में अनुभव करने लगा मेरे पितर का दर्शन हो गया है। मानो मैं कितना विज्ञान के गर्भ में पहुँच गया हूँ।

मुनिवरो! देखो जब विज्ञान के गर्भ में ऋषि-मुनि पहुँचे बेटा! वैदिक आचार्य पहुँचे तो मानो देखो उनके पितामह, महापिताओं के साथ में जो चित्रों का परमाणुवाद बन करके जाता है जो मानो देखो, वह चित्त की प्रवृत्तियों में रत्त रहने वाला परमाणु है बेटा! उसके आकार बन करके अन्तरिक्ष में भ्रमण कर रहे हैं अथवा गतियाँ हो रही हैं। शब्द के साथ में चित्र गति कर रहा है। ममतामयी माता का दर्शन कर रहा है, पितामयी पिता का दर्शन कर रहा है, आचार्यमयी आचार्य का दर्शन कर रहा है। महात्मा भुञ्जु ने कहा ये ब्रह्माण्ड हमारे समीप आ गया है, ये कैसा अनुपम ब्रह्माण्ड है जो हमारे समीप आ गया है। मेरे प्यारे! देखो, वह इन्द्रः एक लौकिक नहीं रह जाता, वह इन्द्र मानो देखो विद्युत बन करके रहती है। वही अग्नि, वह इन्द्र नाम की अग्नि बन करके रहती है जो मुनिवरो! देखो, मानव के वाङ्मय में प्रवेश कर जाती है।

## इन्द्र

वह इन्द्र नाम की जो इन्द्र है मानो देखो, ये जो गन्धर्व है यह इन्द्र में ही तो समाहित रहता है। मानो देखो, गन्धर्व नाम हमारे वैदिक साहित्य में बेटा! बुद्धि का वाची है। बुद्धि का वाची होने से इन्द्र में समाहित हो जाता है। हमारे यहाँ इन्द्र नाम परमपिता परमात्मा को जब स्वीकार करते हैं, यज्ञोमयी इन्द्र कहते हैं। यज्ञ का नाम भी इन्द्र कहा जाता है परन्तु इन्द्र उसे कहते हैं जो इन्द्रियों भवा, इन्द्रियों को अपने में धारण करने वाला हो। परमपिता परमात्मा को इन्द्र कहते हैं, अग्नि को इन्द्र कहते हैं जो अग्नि मानव को प्रकाश में ले जाती है बेटा! वह मानो देखो अग्नि इन्द्र है। हे

इन्द्रो! भवा सम्भवा हे राजन्! तू मानो देखो राजाओं का भी धिराज बन गया है। मुनिवरो! देखो, राजा कौन देवताओं का राजा इन्द्र कहलाता है। जब देवताओं का राजा इन्द्र है तो वे देवता कौन हैं मेरे प्यारे! जिनका वह धिराज बना हुआ है? मुनिवरो! देखो जितना उसका राष्ट्र है, उस राष्ट्र में ऐसे-ऐसे नियम हैं जो प्रत्येक गृह में याग होता हुआ दृष्टिपात होता हो, प्रत्येक गृह में सुगन्धि होती हो, प्रत्येक गृह में अशुद्ध परमाणुओं को निगला जा रहा हो। सुपरमाणु का आदान-प्रदान हो रहा हो ऐसा जो राष्ट्र है जिस राजा के राष्ट्र में इस प्रकार का विज्ञान होता हो वह इन्द्र की उपाधि को प्राप्त होता है।

मेरे प्यारे! देखो जब मैं इन्द्र की विवेचना करने लगता हूँ इन्द्रः हमारे यहाँ इन्द्र नाम बेटा! जहाँ अग्नि को चेताने वाला बेटा! बाह्य जगत आन्तरिक जगत दोनों प्रकार की मानो देखो अग्नियों को वह अपने में चेताता रहता है। और कैसे चेताता है बेटा! जैसे हमारे यहाँ यजमान देखो यज्ञशाला में घृत आहुति देता है और श्रद्धामयी घृतोमयी श्रद्धाः। वह श्रद्धामयी आहुति देता है और वह अपने इन्द्र में देखो वह अपनी आन्तरिक प्रवृत्तियों को जागरुक करता है। परन्तु देखो अपनी इन्द्रियों को जागरुक, अपनी इन्द्रियों का दमन करता हुआ और मुनिवरो! देखो, वह मनस्तत्त्व इन्द्र को बाह्य वृत्तियों में लाने का प्रयास करता है। और कहता है कि तू चेत, हे अग्नि! तू चेतन है, तू चेत बन करके मानो देखो, चेतन बन करके तू हमें चेतना के मार्ग पर ले चल। तू चेतने वाली बन, तू यज्ञशाला में चेत बन करके मानो देखो पदार्थों का भेदन कर देती है, तू विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश हो जाती है, तू विज्ञान की धाराओं में रत्त हो जाती है। मानो देखो, यही अग्नि है जो वेद की धारा, एक वेद के मन्त्र के आश्रित हो करके अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। बेटा! वही तो इन्द्र नाम की अग्नि है जिस अग्नि को वह चेता करके कह रहा है तू इन्द्र है, तू सोम है। मानो तू इन्द्र नहीं सोम बन करके मेरे प्यारे! वह अग्नि का आवेश करता है। सरस्वती बना करके अहा अमृत को पान करने लगता है।

**हे यजमान! तेरे जीवन की धाराएँ जब याग में परणित हो जाती हैं तो मानो तू द्यौ लोक में तेरी ध्वनियाँ ध्वनित हो जाती हैं। तेरी ध्वनि मानो देखो द्यौ लोक में प्रवेश करके तू अग्नि और सूर्य की किरणों के साथ वह अग्नि, वही मानो देखो, शब्द रूपी अग्नि तेरे को ही प्राप्त हो जाती है, तू कितना सौभाग्यशाली बन जाता है।**

मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें विचार ये दे रहा हूँ क्या इन्द्र नाम मेरे प्यारे! जहाँ परमपिता परमात्मा का नामोकरण है वहाँ इन्द्र नाम की वायु है, वहाँ इन्द्र नाम की अग्नि है, जिसके आश्रित हो करके मानव याग करता है। मेरे पुत्रो! देखो उस अग्नि को हमें अपने में जानना चाहिए, उस इन्द्र को जानना चाहिए जो इन्द्र धिराज बन करके देवताओं का धिराज बनता है। बाह्य जगत में भी देवत्त्व और आन्तरिक जगत में ये आत्मा इन्द्र बन करके मानो देवत्त्व को प्राप्त करते हुए देखो, मनुष्यत्त्व को ऊँचा बनाते हुए मन मेरे प्यारे! देखो वृख बन करके रहता है, वही तो इन्द्रपुरी है।

## इन्द्रपुरी

बेटा! देखो, इन्द्रपुरी का वर्णन महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने किया है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! इसका बड़े विशुद्ध रूपों से इसका अन्वेषण अथवा इसका वर्णन किया है। जब इन्द्र मानो देखो देवताओं को ले करके, जब दैत्यों के द्वारा संग्राम करने लगा, संग्राम करते-करते देवासुर संग्राम बड़ा विशाल, वो देवासुर संग्राम होता रहा। जब देवासुर संग्राम बहुत समय तक चलता रहा, गति करता रहा तो एक समय बेटा! देवत्त्व, महाराजा इन्द्र की उस पुरी में इन्द्र, मानो देखो इन्द्र की, इन्द्र के मानो देखो देवताओं ने दैत्यों को विजय कर लिया था। वे दैत्य मानो देखो, अपने यहाँ अपनी आभा में आकुञ्चन स्वरूप को उन्होंने धारण कर लिया और देवताओं ने व्यापक रूप को धारण कर लिया। मानो देखो उन्हें देवताओं की सभा में नाना रूपों में रत्त करने वाले उस ध्वनि का, वह ध्वनि उत्पन्न होने लगी जिस ध्वनि का मानो देखो शब्दार्थ मेरे परमपिता परमात्मा, सृष्टि के पिता ने सृष्टि के प्रारम्भ

में किसी काल में उत्पन्न किया था। और वह जब उत्पन्न किया था तो मानो देखो, वही ध्वनि पुनः से मानो ध्वनित होने लगी। जब वह शब्द ध्वनित होने लगा तो मानो देखो, वह ध्वनित द्वारा वह शब्द मेरे प्यारे! वह ध्वनि महाराजा मुनिवरो! देखो वह वृख को प्रदान कर दई थी। वही वृख मेरे प्यारे! देखो वह वृख जब उसे मानो अपनी आभा में परणित करने लगा तो संसार देवत्त्व मानो देखो, देवपुरी को धारण करने लगा।

जब यह संसार देवपुरी बन गया, देवपुरी बनने लगा, मानो देखो, बलवती देवताओं की विशेष बन गई। तो बेटा! एक समय देखो, दैत्यों ने पुनः से सभा का आयोजन किया और उस सभा में मुनिवरो! देखो, महाराजा विरोचन को सभापति बनाया। विरोचन से कहा कि महाराज! देखो, यह देवताओं की सभा है, देवताओं ने हमें विजय कर लिया है और देवता मानो देखो अपनी ध्वनि में ध्वनित हो रहे हैं। मानो ये कैसे, हम दैत्यों का क्या बनेगा जब देवताओं का ये बल मानो बलवती होता जा रहा है, इनकी गणना विशेष होती जा रही है। मेरे पुत्रो! देखो महाराजा विरोचन ने कहा किसके माध्यम से ये ध्वनि का प्रसारण हो रहा है, उस मानो देखो प्रसारण केन्द्र को तुम अपने में केन्द्रित कर लो। मानो देखो, उसकी जानकारी की जा सकती है। मेरे प्यारे! देखो, वह जहाँ से वह ध्वनि का प्रसारण हो रहा था उस मानो देखो वृख को, वृख रूपी यन्त्र को बेटा! दैत्यों ने अपने में धारण कर लिया। दैत्य कौन थे? सुम्भवा शुम्भ, निशुम्भ, रक्तबीज तीनों दैत्यों ने बेटा! उसको अपने में धारण कर लिया। धारण करने के पश्चात् मानो देखो, उसका निरीक्षण हुआ। तो उसने, वृख ने उस ध्वनि को, उस देवताओं की धरोहर को मेरे प्यारे! देखो रेणुका में समाहित कर दिया था। वह तो रेणुका में प्रवेश कर गयी और जब विरोचन ने मङ्गलम् ब्रहे जब वृख का मन्थन किया तो बेटा! वृख में वह ध्वनि नहीं थी जिससे ये देवताओं का समाज बनता चला जा रहा था। उन्होंने निर्णय दिया हे दैत्यो! इसमें वह ध्वनि नहीं है जिससे ये संसार ध्वनित हो रहा था। वह तो ध्वनि रहित हो

गया है। उन्होंने कहा तो महाराज! यह ध्वनि कहाँ चली गयी? उन्होंने कहा वह ध्वनि तो रेणुका में प्रवेश कर गयी है। बेटा! देखो, रेणुका कौन है, वह रेणुका कौन है? मानो देखो, वृख से ऊँची प्रतिभा का नाम ही तो मानो देखो, रेणुका कहा जाता है। रेणुका के वैदिक साहित्य में जब चिन्तन किया जाता है तो बड़े पर्यायवाची शब्द प्राप्त हो जाते हैं। परन्तु देखो मैं तुम्हें सूक्ष्म परिचय देने आया हूँ। बेटा! रेणुका के जा करके मध्य रात्रि में उन्होंने एक विशाल आचमन किया और आचमन करते ही मुनिवरो! वह रेणुका छली गयी। रेणुका को ये ज्ञान हो गया आज तू छली जाएगी। तो मानो देखो, प्रजापति ने जो इन्द्र के यहाँ एक अग्निष्टोम याग हुआ (किया) था। मेरे प्यारे! देखो उस याग में रेणुका की वह ध्वनि प्रवेश कर गयी। अब मेरे प्यारे! जब रेणुका ने उस ध्वनि को देवताओं की सभा में, देवताओं को प्रदान कर दई। अब बेटा! रेणुका जब छली गयी। महाराजा विरोचन ने जब उसका मन्थन किया तो उसमें वह ध्वनि नहीं रही। उन्होंने कहा वह ध्वनि कहाँ गई दैत्यों अब्रहे! उन्होंने कहा वह तो यज्ञ के पात्रों में प्रवेश कर गयी है, उसके दस पात्र होते हैं। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा उसे तुम हे दैत्यराजो! निकास नहीं सकोंगे, वह तो इन्द्रपुरी ऐसी है।

मेरे प्यारे! देखो, अब दैत्यराजों ने विचारा कि महाराज! ये यज्ञ के दस पात्र क्या हैं? उन्होंने कहा कि इन्द्र से ही यह प्राप्त करो, क्योंकि इन्द्र ही जानता है उस याग को। उन्होंने कहा, प्रभु! आप भी तो जानते होगें क्योंकि आपने वर्णन किया है। जब महाराजा मानो रक्तबीज ने, तीनों दैत्यों ने जब ये प्रार्थना की तो मानो उस समय कहा विरोचन ने क्या वह मानो देखो, इन्द्र और मैंने, दोनों ने एक समय प्रजापति के यहाँ जा करके इस शिक्षा को धारण किया था। महाराजा प्रजापति ने जब मुझे इस शिक्षा को प्रदान किया था तो उन्होंने, मानो मैं तो इसमें रह गया क्या ये शरीर जो है यही, इसी में आनन्द लेने का नाम ही देखो मोक्ष और परमपिता परमात्मा का ये जगत है। परन्तु इन्द्र ने उस अध्ययन के रूप में गम्भीरता में प्रवेश करके जाना, इसको मैं नहीं जान सका।

## दस पात्र

मेरे प्यारे! देखो, विचारा गया अब ''इन्द्रो भवा सम्भवा''। मेरे प्यारे! देखो, चिन्तन करने से प्रतीत हुआ क्या वह जो यज्ञ के दस पात्र हैं जिसमें वह देवताओं की धरोहर विद्यमान रहती है। मानो देखो, ये यज्ञ के दस पात्र बेटा! इस मानव शरीर को, मानो शरीर रूपी यज्ञशाला का जब सृष्टि के पिता ने बेटा! निर्माण किया था किसी काल में, तो मानो ये यज्ञवेदी के रूप में इस मानव शरीर की रचना की। मानव शरीर की रचना यज्ञवेदी के रूप में रची और रचने के पश्चात् बेटा! इसके दस पात्र हैं। वे दस पात्र क्या हैं बेटा! पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ कहलाती हैं, वे यज्ञ के दस पात्र बने हुए हैं। मानो देखो, यज्ञ के दस पात्रों से ही तो आहुति दी जा रही है। मानो देखो, पञ्च होता बन करके कोई रूप को, रूप रूपी साकल्य को ला रहा है। कोई प्रेम रूपी साकल्य को ला रहा है, कोई सुगन्धी रूपी साकल्य को ला रहा है, कोई मानो देखो, कोई अप्रतो बेटा! देखो, कोई शब्द अब्रहे दिशाओं के रूपों में रत्त होने वाले साकल्य को, रसों को ला रहा है। परन्तु देखो, उनका साकल्य बन करके, उनका साकल्य बना है और साकल्य बन करके बेटा! देखो वो ही हृदयरूपी यज्ञशाला में याग हो रहा है। बेटा! वह प्रिय याग हो रहा है।

## धर्मरूपी ध्वनि

वह यज्ञ मानो ब्रह्म वाचा देवाः दस पात्रों वाचो उप्रहा तो इन्द्रियों में मानो धर्म और वह कौन-सा जो शब्द है, ध्वनि है वो क्या है? वेद का ऋषि कहता है वह धर्मरूपी ध्वनि है। जो धर्मरूपी ध्वनि मानो प्रत्येक मानव की इन्द्रियों में समाहित रहने वाला धर्म है इसको मानव देखो, धर्म के, अधर्म के स्वरूप में प्रवेश कर जाता है बेटा! वह धार्मिक कहलाता है। वह धर्म के मर्म को जानता है, धर्म के मर्म को कौन जानता है? जो प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों को जान करके उनका साकल्य बनाना जानता है और जो मानो देखो उदासीन हो करके जो विवेकी बन करके मानो देखो, विवेक में उन्हें ला करके मुनिवरो! देखो वह जो ज्ञानरूपी अग्नि प्रदीप्त हो रही है उसे वह

साकल्य आहुत कर रहा है। तो मेरे प्यारे! मैं कहाँ चला गया हूँ, विचार क्या? मानो वही तो इन्द्रपुरी कहलाती है जहाँ इन्द्र देवता बन करके बेटा! देवताओं का धिराज बना हुआ है। वह मानो देखो धर्म की प्रतिभा को जानता है या आध्यात्मिक एक सङ्ग बन गया है। बेटा! जो आत्मा मानो देखो आत्मारूपी जो इन्द्र है वही तो प्रजापति के द्वार पर जाता है जो प्रजा का सर्जन करने वाला है जो प्रजा को रचित के रूप में परणित कर लेता है। तो मेरे प्यारे! मैं कहा चला गया हूँ, दूरी चला गया।

## महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज द्वारा इन्द्र की विवेचना

सोमकेतु और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज का ये सम्वाद प्रारम्भ हुआ, ये सम्वाद मानो गतिशील होता रहा। महाराजा सोमकेतु मानो इसको श्रवण करता रहा और महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज ने, ऋषि ने बेटा! इसका वर्णन किया। विज्ञान के वाङ्मय में और मानो देखो धर्म के वाङ्मय में बेटा! इन्द्र की प्रतिष्ठा कहलाती है। वह इन्द्र है जो राजा बन करके धर्म की स्थापना कर देता है। वह इन्द्र है जो मानव को कर्त्तव्यवादी बना देता है। वह इन्द्र है जो विज्ञान की धाराओं में रत्त रह करके मानो देखो, विज्ञान को इस पृथ्वी से ले करके लोक-लोकान्तरों की उड़ान में मानो निहित हो जाता है। वह ध्वनियों में ध्वनित होने वाला वो धर्म है जिस धर्म को अपना करके मानव धर्म की प्रतिभा में रत्त होता हुआ बेटा! वही तो धर्म है जो इन्द्रियों में समाहित हो रहा है। वही तो धर्म है, जो सु मानो, जो सु में समाहित हो रहा है, वही तो धर्म कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज ने इन्द्र की इस प्रकार जब विवेचना की, इन्द्र की जब सभा की चर्चाएँ कीं तो बेटा! देखो महाराजा सोमकेतु मौन हो गया और सोमकेतु ने कहा प्रभु! आपको धन्य है आपने तो मेरे ब्रह्माण्ड का स्पष्टीकरण किया है। मैं इस ब्रह्माण्ड में पुनः-पुनः जाता रहता हूँ परन्तु आज भी मैं चला गया हूँ, तो मुझे आश्चर्य हो रहा है। तो हे भगवन्! मैं आपको नमस्कार करता हूँ। मेरे प्यारे! सोमकेतु मुनि उनको नमस्कार किया परन्तु महात्मा वशिष्ठ ने

कहा नहीं, ऐसा मत कहो ऋषिवर! मानो देखो नमस्कार करना तो मुझे है, आप को नहीं है क्योंकि नमस्कार इसलिए मत करो क्योंकि तुम्हारा मैं समाधान अभी नहीं कर सका, अभी तुम्हारा समाधान रह रहा है। परन्तु जो तुम्हारे मन में है उसको उद्धृत करो मैं उसका आगे प्रयत्न करूँगा। मेरे प्यारे! देखो, इन्द्र की व्याख्या पान करते हुए उन्होंने बेटा! जब यन्त्रों में, मानो शब्दों में शाब्दिक होता हुआ वायु इन्द्र के लिए मानो याचना करता हुआ, मानो शब्दों के आकारों को दृष्टिपात कर रहा है। बेटा! देखो, वही विज्ञान है, वही धारा है जिसको अपनाने के पश्चात् मानव के जीवन में एक प्रतिभाषितता हो जाती है।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, विशेष चर्चाएँ न करता हुआ केवल मैं यह उच्चारण करने जा रहा हूँ बेटा! सृष्टि के प्रारम्भ में परमपिता परमात्मा ने इस शरीर रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया। इसी यज्ञशाला के तट पर आ करके मानव बेटा! नाना प्रकार के यागों का आयोजन करता है, नाना प्रकार के यागों को रसिक बना लेता है क्योंकि उसकी बुद्धि, उसकी मानो मेधा में वह वार्त्ता आती रहती है क्योंकि यह जो शरीर रूपी, जिस रूप में मानव का निर्माण हुआ वह रूप उसके समीप आते रहते हैं। माता-पिता की जैसी भावना के आधार पर मानव का मानो देखो, मानव का परमाणुवाद शिशु के रूपों में उद्धृत हुआ है तो मानो देखो संस्कार उसके ज्यों के त्यों बने रहते हैं। वही संस्कार हैं, जो मानव के नाना प्रकार की रचनात्मक क्रियाकलापों में वह परणित होता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, वही तो विचार आएँगे, वही तो रचना आएँगी। मानो देखो, वही रचना मेरे पुत्रो! देखो, साकार रूप बन करके मानव के समीप मानो एक यागों की रचना का वो निर्माण करता है। वह यज्ञशाला का निर्माण कर रहा है, जैसे बेटा! एक मानव देखो, चन्द्र लोक में जाना चाहता है। चन्द्र लोक में जाने की भावना का उसे जन्म हुआ है परन्तु वह जन्म कहाँ से हुआ है, वह जन्म उसी रूपों में हुआ है क्योंकि चन्द्रमा से चन्द्रमा में जाने वाली तरङ्गें उसके

अन्तर्हृदय में, लघु मस्तिष्क में विद्यमान हैं। यदि चन्द्रमा की (तरङ्गें) लघु मस्तिष्क में नहीं होतीं तो चन्द्रमा का भान उसे कदापि नहीं हो सकता था। तो मेरे प्यारे! इसी प्रकार एक मानव सूर्य लोक में जाना चाहता है।

## सोमकेतु वाचक कृतिका भुज्जु ऋषि का सूर्य की किरणों के साथ गमन

मेरे प्यारे! मुझे एक वाक्य स्मरण आ गया है। एक समय बेटा! महात्मा भुज्जु के सातवें महापिता थे बेटा! सोमकेतु वाचक कृतिका भुज्जु, मुनिवरो! देखो, उनके सातवें पिता थे। एक समय वह दण्डक वनों में विद्यमान हो करके मानो देखो, एक समय वह अध्ययन करते-करते स्वतः अपने मानवीय दर्शन का अध्ययन कर रहे थे। अध्ययन करते-करते उनके हृदय में ये वाक्य आया क्या मैं सूर्य की किरणों के साथ में, मैं मानो सूर्य लोक में जाना चाहता हूँ। जब यह वाक्य मानो उसके हृदय में आया, हृदय में समाहित होते हुए बेटा! उसी वाक्य को ले करके कि वह मेरे हृदय में आया क्यों है? इसका मूल कारण क्या है? तो बेटा! भ्रमण करते हुए वह चाक्राणी गार्गी के समीप पहुँचे। उस समय चाक्राणी गार्गी बारह वर्ष का अनुष्ठान कर रही थी, वेद का अध्ययन कर रही थी। मानो देखो, वायुमण्डल से वह पोषक तत्त्वों को प्राप्त करती थी और मानो देखो, वेद का जब गान गाती थी अहिंसा परमोधर्म में परणित होती हुई सर्पराज मानो देखो उसके चरणों की वन्दना कर रहा है। श्रवण करने वाले मानो कौन है बेटा! प्राणी कौन है? सिंह राज है, मृगराज है, उस ध्वनि को जो ध्वनित कर रहा है, जो अपने में श्रवण कर रहा है मानो प्रसन्नता को अपने में ग्रहण करने वाला जो सिंहराज के हृदय में पिपासी आत्मा विद्यमान है। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषिवर! उसके द्वार पर पहुँचे तो उन्होंने उनके चरणों की वन्दना की और यह कहा कि मातेश्वरी ये मेरे हृदय में भाव क्यों आया कि मैं सूर्य की किरणों के साथ गमन करूँ? मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा हे देवक! हे ऋषिवर! ये तो मानव के शरीर का जब निर्माण होता है परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में, सृष्टि के पिता ने जब यज्ञशाला का निर्माण किया था

तो इस यज्ञशाला का मानो देखो देवता, उद्धृत होने वाला सूर्य कहलाता है। इसका देवता ही सूर्य है। यह सृष्टि के प्रारम्भ में मानो देखो यह आभा बन गयी थी और यह आभा मानो सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके सृष्टि के अन्तिम चरण तक मानव की ये जो यज्ञशाला बनी हुई है इसमें मानो वो भावना, वो अङ्कुर, वो परमाणु सूर्य के ज्यों के त्यों विद्यमान रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो जब चाक्राणी ने यह वर्णन कराया क्या वह तुम्हारे हृदय में सूर्य के कण हैं, सूर्य के परमाणु हैं और सूर्य के किरणों के परमाणुओं होने से वह परमाणु तुझे बाध्य कर रहे हैं जब तू उसके ऊपर साधना कर रहा है। जब साधना की गई, साधना जब होने लगी तो अन्तर्हृदय से वह मानो भावनाओं ने जन्म ले लिया और वह भावना जब जन्म लेने लगी तो मानो क्योंकि जो वह अङ्कुर थे सूर्य की किरणों के अन्तर्हृदय में, यज्ञशाला में मानो देखो, उसका विभाजन हो गया। जब उसका विभाजन हो गया तो उसमें से अरबों-खरबों तरङ्गों का जन्म हो करके मानो तेरे जीवन को उसने बाध्य कर दिया है, इसलिए तेरे हृदय की प्रबल इच्छा बन गयी है क्या तू सूर्य की किरणों के साथ में तू गमन कर।

मेरे प्यारे! देखो, इसका भाव क्या है? वेद का वाक्य कहता है क्या? वह जो सूर्य की मानो भावना, मानो किरणें हैं, परमाणु हैं वह तेरे हृदय में पुनः से विद्यमान हैं उनको जागरुक करना तेरी साधना के माध्यम से है। तुझे साधना करनी होगी और साधना के द्वारा ही तुम उन परमाणुओं को जागरुक करके मानो यन्त्रों के द्वारा नहीं, यन्त्रों का भान भी तुम्हें उसी काल में आता है जबकि मानो देखो, जब तू सूर्य की आभा में रत्त रहना चाहता है। बेटा! देखो वही महात्मा भुञ्जु के मानो देखो, सातवें महापिता चाक्राणी के संरक्षण में रह करके उन्होंने बारह वर्ष का अनुष्ठान उन्होंने ये किया और वह सूर्य की किरणों के साथ मेरे प्यारे! सूर्य लोक में जाने वाले यातायात मानो देखो, मनों से नहीं शरीरानाम् भविते देवाम् मानो देखो, क्रियाओं से जाना प्रारम्भ कर दिया।

मेरे प्यारे! यह कैसा अनुपम मानो ये ब्रह्माण्ड है जिसके ऊपर मानो देखो एक हम यह चर्चा करने लगे हैं। ये तो बड़ी विचित्र चर्चाएँ हैं। जब मैं, उस वेद की आभा में रत्त होने के लिए हम तत्पर होते हैं तो हमें यह दृष्टिपात होता है क्या यह वेद अनुपम प्रकाश है जिस प्रकाश के लिए मानव सदैव प्रयास करता रहता है। उसी के प्रकाश में रत्त रहता है, मानो देखो, उसी का प्रकाश इसके समीप आ करके मानो उसे क्रियाकलाप के लिए बाधित कर देता है।

मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ परन्तु देखो महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज ने सोमकेतु को बेटा! नाना प्रकार के उदाहरण उद्धृत करते हुए बेटा! उन्हें देखो मौन कर दिया। और वह मौन हो गए। उन्होंने कहा हे भगवन्! पुनः जब ये उन्होंने भुञ्जु की गाथा प्रगट की और वह विज्ञान उसके समीप आया तो उन्हें पुनः नमस्कार करने लगे। उन्होंने कहा ऋषिवर! मैं नमस्कार लेने के अभी इस योग्य नहीं हूँ क्योंकि मैं तुम्हारे प्रश्नों का पूर्णरूपेण तुम्हें उत्तर नहीं दे सका हूँ। मैं अन्तिम चरण पर अभी तक नहीं जा सका हूँ।

मेरे प्यारे! विचार-विनिमय हमारा क्या चल रहा था क्या मुनिवरो! वह जो इन्द्र है–हम इन्द्र की उपासना करते चले जाएँ। इन्द्र ही तो देवासुर संग्राम बना हुआ है, इन्द्र ही तो मेरे प्यारे! देखो, वही तो उपाधि धिराज बन करके मानो प्रत्येक प्राणी मात्र के हृदयों में समाहित हो रही है। वही इन्द्र परमात्मा बन करके बेटा! देखो, संसाररूपी यज्ञशाला का निर्माण करता है। मेरे प्यारे! देखो, मैं आगे की शेष चर्चा तो कल ही प्रगट करूँगा बेटा! आज मुझे इतना समय आज्ञा नहीं दे रहा है जो मैं अपने विचारों को अग्रणीय बनाऊँ परन्तु विचार केवल ये है क्या आज मुनिवरो! देखो यागाम् भविते देवाम् हम जब घृत के द्वारा श्रद्धामयी, घृतोमयी श्रदाः जब अग्नि में प्रवेश करते हैं तो अग्नि विभक्त करती हुई इन्द्र बन करके बेटा! ये वृत्रासुर में प्रवेश कर जाती है और मानो अशुद्ध परमाणुओं को अपने में निगलती चली

जाती है। और वृत्रासुर बन करके बेटा! वही वृष्टि के मूल में प्रवेश हो करके ये पृथ्वी नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन जाती है।

मेरे प्यारे! आज का विचार-विनिमय क्या? हम परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करते हुए देव की आभा में रत्त रहते हुए बेटा! हम मुनिवरो! देखो अपने में मानो विज्ञान–भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान, दोनों का समन्वय करते चले जाएँ क्योंकि दोनों के समन्वय होते ही मेरे प्यारे! देखो, राष्ट्र और समाज बेटा! पवित्र बनते हैं और जब ये केवल देखो, एक भौतिकवाद रह जाता है उसमें आध्यात्मिकवाद की पुट नहीं होती तो राजा का राष्ट्र नग्न बन जाता है। समाज की प्रवृत्तियाँ नग्न रह जाती हैं और वह प्रवृत्ति जब नग्न बन जाती है तो वही प्रवृत्ति मानव के नष्ट होने का एक मूल कारण बना करती है। मेरे प्यारे! वही इसलिए मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें निर्णय दिया था क्या हमारे ऋषि-मुनियों का जो विचार-विनिमय करने का जो एक माध्यम रहा है वह दोनों प्रकार के विज्ञान का रहा है। आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद, जब दोनों का समन्वय होता है तो समाज में महानता छाती चली जाती है और राष्ट्र पवित्र बनता चला जाता है। परन्तु देखो, जब केवल भौतिक विज्ञान वह भी नग्न रह जाता है तो मुनिवरो! देखो, नग्न क्या करता है, नग्न विज्ञान, भौतिक विज्ञान मेरे प्यारे! आध्यात्मिकवाद जब नहीं होता तो नग्न भौतिक विज्ञान माया बलवती हो करके, माया के क्षेत्र में प्राणी अपने को मानो देखो समाप्त कर लेता है और मुनिवरो! देखो विज्ञान उसकी मृत्यु का मूल कारण बन जाता है। ये है बेटा! आज का वाक्। मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ पुत्रो! केवल सूक्ष्म-सा परिचय देने चला आता हूँ और वह परिचय क्या है? क्या मुनिवरो! देखो ऋषि-मुनियों के विचार-विनिमय, उनका क्रियाकलाप कितना विचित्र रहा है। समय मिलेगा तो बेटा! मैं सोमकेतु ऋषि की चर्चा कल प्रगट करूँगा।

**आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः** ये कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए, परमपिता परमात्मा के मूल रूप को जान

करके बेटा! अपनी यज्ञरूपी जो यज्ञशाला है इसे पवित्र बनाते चले जाएँ। इसको पवित्र बनाना ही हमारा कर्तव्य है। ये है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक्य उच्चारण का अभिप्रायः ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ। ये आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्! अब आज्ञा।
पूज्यपाद-गुरुदेव–आनन्द मङ्गलाचार! शान्तिः!

**दिनाँक** : 12 अप्रैल, 1985
**समय** : रात्रि 8:30 बजे
**स्थान** : श्री बैजनाथ अबरोल
पश्चिम पंजाबी बाग,
दिल्ली

## नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गुणगान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

**वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)** PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

**शृङ्गीऋषि वेबसाईट**

**Website : www.shringirishi.in**
**Email : contact@shringirishi.in**

॥ ओ३म् ॥

# महर्षि सोमकेतु कौटल्य और राजा सगर का दान पर सम्वाद

जीते रहो!

महर्षि कौटल्य महाराज और उनके जो महापिता पवनकेतु कौटल्य थे वह अपने आश्रम में अध्ययन कर रहे थे और इस अध्ययन में लगे हुए थे कि चन्द्रमा की किरणें, चन्द्रमा की कान्ति जब सूर्य की किरणों में मिलान करती है तो उसका कैसा स्वरूप होता है। इस सम्बन्ध में जब वह विचार-विनिमय कर रहे थे तो राजा के यहाँ से एक गऊ उनके द्वारा ऋषि के यहाँ पहुँची। तो सोमकेतु कौटल्य ऋषि महाराज ने कहा प्रभु! हम इस गऊ को स्वीकार नहीं करते। सेवकों ने कहा प्रभु क्यों नहीं करते? उन्होंने कहा यह गऊ मैं स्वीकार नहीं करूँगा। वह सेवक राजा के समीप पहुँचे और राजा से कहा ऋषिवर! गऊओं को स्वीकार नहीं कर रहे हैं, उन्होंने कहा बहुत प्रिय चलो हम गमन करें। राजा सगर ने अपने पुत्र सुखमञ्जस और मन्त्री सहित वहाँ से गमन किया और वह ऋषि के द्वार पर पहुँचे। बारी-बारी से उन्होंने ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और कहा प्रभु कुशल हो। उन्होंने कहा हम सर्वत्रता में कुशलवत् हैं। जब उनको यह उत्तर मिला तो विचार सँहिता में जब कामधेनु ऋषि को प्रदान करने लगे तो महात्मा सोमकेतु कौटल्य ने कहा राजन्! मैं इस गऊ को स्वीकार नहीं करता। उन्होंने कहा प्रभु क्यों नहीं करोगे? उन्होंने कहा राजन्! तुम्हें यह गऊ देने का अधिकार ही नहीं है। दर्शन की भाषा में जब तुम पहुँचोगे, तो दर्शनों की भाषा में तुम्हें यह अधिकार नहीं है कि तुम गऊ प्रदान करो। उन्होंने कहा प्रभु! क्यों नहीं है? उन्होंने कहा हे राजन्! जब तुम स्वयँ कला कौशल करते हो, अन्न को उद्गमता से प्राप्त करते हो तो तुम यह गऊ किसके द्रव्य से प्रदान कर रहे हो। राजा ने कहा प्रभु राष्ट्र का जब नियम बना तो द्रव्य के

विभाग भी बन गए थे और द्रव्य के विभाग में एक भाग ऋषि-मुनियों का है तो कोई भी राष्ट्र में मानव दीनता को प्राप्त न हो। मुनिवरों! ऋषि ने जब राजा से यह प्रश्न किया कि दीन कौन होता है? राजा ने कहा कि दीन वह होता है जो किसी के आश्रित रहता है। ऋषि ने कहा तो हम किसी के आश्रित नहीं। हम उसके आश्रित रहते हैं मानो जो संसार का नियन्ता, निर्माण करने वाला है। उसमें भी कुछ वार्त्ताओं में हम उसकी पाप वृत्तियों में रत्त रहते हैं। उन्होंने वर्णन करते हुए कहा कि जैसे हम कर्म करने में स्वतंत्र है, कर्मों का फल भोगने वाला, मानो उसको दण्ड देने वाला कोई और है। दण्ड देने के नाते देखो हम उसको स्वीकार करते हैं और उसे स्वीकार करने के पश्चात् हमारी मनोनीतता पवित्र बन जाती है। ऋषि ने कहा हे राजन्! **वही तो दीन होते हैं जो परमात्मा से विमुख हो जाते हैं, जो परमपिता परमात्मा को नहीं जानते।** तो राजन् हम दीन नहीं हैं, हम तो सदैव अपनी आभा में गमन करते रहते हैं। देखो, यह वायु अपने कक्ष में भ्रमण करती रहती है, अग्नि के परमाणु अपनी आभा में रत्त होते रहते हैं। तो राजन् हम 'अन्नम् ब्रह्मा' इस अन्न को ग्रहण नहीं करेंगे क्योंकि जो कला कौशल करते हो, उसके बदले में जो द्रव्य आता है, उस द्रव्य की तो गऊएँ नहीं हैं। इसीलिए राजन्! गऊ देने का तुम्हें अधिकार नहीं है।

बेटा! राजा सगर के मस्तिष्क में एक नवीन क्रान्ति जागरूक हो गई। एक नवीनता में उन्होंने कहा ऋषिवर! वाक्य, तो आपका यथार्थ है परन्तु मैं इसे समर्पित इसलिए करना चाहता था कि राष्ट्र का जो द्रव्य है उसका उपयोग सत से गुथा हुआ होना चाहिए। ऋषि ने कहा हे राजन्! **राष्ट्र के राज का जो अन्न होता है** वह वेद कहता है **'त्रिवर्धम्, त्रिवर्तम्, ब्रह्माण्म् त्रिवर्धा'**। त्रिवर्धा तीनों ही सब में व्याप्त हैं। इसलिए राष्ट्र का जो कोष होता है, उसमें मानो रजोगुण, तमोगुण व्याप्त होता है। सतोगुण ध्याना भी होता है परन्तु तीनों व्याप्त रहते हैं। जब तीनों गुण धारण होते रहते हैं तो हे राजन्! मैं इस अन्न को इसलिए ग्रहण नहीं करूँगा। क्योंकि राष्ट्र के अन्न को ग्रहण करने वाला जो जिज्ञासु है, जो यथार्थी है जो प्रभु की पूजा

करने वाला मानव है देखो वह प्रभु की पूजा में रत्त रहता है, उसकी प्रवृत्तियाँ नष्ट हो करके वह प्रभु से विमुख हो जाता है। इसलिए देखो राजा को भी उस राष्ट्र कोष के अन्न को ग्रहण नहीं करना चाहिए। बेटा! जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो राजा सगर के विचारों में यह वाक्य आया और उन्होंने पुनः से यह प्रार्थना की प्रभु! मुझे इसका और स्पष्टीकरण कराएँ। उन्होंने कहा हे राजन्। जिस समय राजा के राष्ट्र में अज्ञान, अन्धकार आता है, राजा के मस्तिष्क में भी तो उस काल में आता है। उस राजा के समाज में एक तथ्य होता है ब्रह्मवेत्ताओं का, एक तथ्य होता है महापुरुषों का। एक ऋषि मुनि है, जब वह विवेकी पुरुष स्वयँ पुरुषार्थ न करके राष्ट्रीय अन्न को ग्रहण करते हैं उस अन्न को जो जिज्ञासु ग्रहण करने लगता है तो राजा के राष्ट्र से जिज्ञासा भ्रष्ट हो जाती है और जब जिज्ञासु नष्ट हो जाते हैं, तीव्र इच्छा वाले तपस्वी चले जाते हैं, तो राजा के राष्ट्र में विवेक नहीं रहता है। और जिस राष्ट्र में, गृह में विवेक नहीं होता तो वह राष्ट्र एक समय रक्त भरी क्रान्ति के मुखाबिन्द में चला जाता है। ऋषि के इन अमृतमयी वचनों का पान कर राजा सगर बड़े आश्चर्य चकित हुए। उन्होंने कहा प्रभु। यह तो वाक्य यथार्थ है क्योंकि हमारे पिता, महापिता भी यही वर्णन करते चले आए हैं कि राष्ट्र के अन्न को ग्रहण न करो इससे बुद्धि भ्रष्ट हो आती है। राष्ट्र में स्वार्थवाद आ जाता है।

**पूज्यपाद-गुरुदेव**

# सूचना

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज द्वारा संस्थापित वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) दिल्ली को दानदाताओं द्वारा दान देने पर आयकर विभाग की धारा 80-जी के अन्तर्गत छूट की सुविधा उपलब्ध है।

**वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

॥ ओ३म् ॥

# ऋषियों के उद्‌गार

1. जब ज्ञान और प्रयत्न दोनों का मिलान हो जाता है, ऋषि कहते हैं उस अवस्था का नाम मुक्ति कहा जाता है।
2. ब्रह्म का जो विषय है वह बुद्धि का विषय नहीं, केवल अनुभव का विषय रह जाता है।
3. परमात्मा न्याय करता है अथवा दया और न्याय दोनों किया करता है।
4. प्रकृति के पाँच गुण हैं जिनको हमारे यहाँ ध्रुवा, ऊर्ध्वा, व्यापकता, प्रसारण और आकुञ्चन कहा गया है।
5. नास्तिक उसको कहते हैं जिसको स्वयँ पर आत्मविश्वास नहीं होता है।
6. प्रभु का जो चिन्तन आत्मिक श्रद्धा से करता है और आत्मा के स्वरूप को जानता है वह संसार में वास्तविक आस्तिक होता है।
7. प्रभु अकर्त्ता है क्योंकि उसकी अकर्त्ता में ही कर्त्ता की प्रतीति होने लगती है।
8. यदि आत्मा की उन्नति का कोई मूल कारण है, तो उसका आस्तिकवाद है।
9. ज्ञान मार्ग में और भक्ति मार्ग में बड़ी भिन्नता होती है।
10. जो मानव मन से घृणा करता है, उसका संसार में कहीं आदर नहीं होता है।
11. आत्मविश्वासी जो प्राणी होता है उसके जीवन में अन्धकार नहीं होता है।
12. आत्मविश्वासी ही अंहिसा परमोधर्म का ही पालन कर सकता है।
13. आत्मविश्वासी प्राणी होता है उसका तारतम्य प्रभु से होता है।
14. जिन गृहों में मनमनता रहती है वह गृह स्वर्ण के तुल्य होते हैं।
15. ऊँचा संसार में वही व्यक्ति बनेगा जिसके हृदय में उदारता होगी, जो अहिंसा परमोधर्म का पुजारी होगा।

।। ओ३म् ।।

# श्रद्धा-सुमन

श्री नफेसिंह देसवाल एवम् धर्मपत्नी
श्रीमति कमला देसवाल

वैदिक अनुसन्धान समिति के भूतपूर्व मन्त्री आदणीय श्री नफेसिंह देसवाल जी ने परमपिता परमात्मा की असीम कृपा एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के शुभ आशीर्वाद से वैवाहिक जीवन के 51 वर्ष दिनाँक 28-6-2021 को सुखपूर्वक व्यतीत होने की पावन वेला के शुभ अवसर पर 11,000 रुपये का सात्विक सहयोग समिति के प्रकाशन कार्य के लिए पूज्यपाद गुरुदेव के श्रीचरणों में अर्पित किया है। अपने भविष्य को भी प्रकाश से सम्पन्न प्रतीत करते हुए उन्होंने सभी संसार जनों के सुखी, स्वस्थ और रोग रहित जीवन की मङ्गल कामना ईश्वर से की है।

श्री देसवाल जी अपने सुपुत्र श्री विक्रम व पुत्रवधू अनिता तथा पौत्र तुषार व निशान्त सहित आनन्द से परिवार को याज्ञिक बनाने में संलग्न हैं। और उनकी सुपुत्री प्रिय कौशल्या अपने पतिदेव श्री नवीन शौकिन एवम् पुत्री निधि व सुपुत्र अर्जुन को वैदिक सम्पदा से निरन्तर अपने गृह में सम्पन्न बना रही हैं।

श्री देसवाल जी समिति के कार्यों को निरन्तर सहयोग देने के साथ-साथ आर्य समाज में भी मन्त्री रहते अपने जीवन को वैदिक सम्पदा से निरन्तर सम्पन्न कर रहे हैं। समिति ऐसे श्रद्धालु एवम् याज्ञिक परिवार की सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी उन्नति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है।

**वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

।। ओ३म् ।।

# जन्मदिन एवम् नामकरण संस्कार

आयुष्मती गार्गी अपने पिता श्री मोहित त्यागी के सङ्ग

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के शुभाशीर्वाद से श्रीमति सरोज त्यागी धर्मपत्नी श्री नरेन्द्र त्यागी जी निवासी ग्राम नावला जिला मुजफ्फरनगर, उ.प्र. ने अपनी आयुष्मती पौत्री गार्गी के प्रथम जन्मदिन की पावन वेला में नामकरण उद्घोष पूज्यपाद गुरुदेव की तपोस्थली पर स्वस्ति याग की सम्पन्नता द्वारा दिनाँक 22 फरवरी, 2021 को कराया जिसमें कन्या की माता श्रीमति शन्नो त्यागी एवम् पिता श्री मोहित त्यागी जी ने देव पूजा के माध्यम से सभी देवताओं को सुगन्धित साकल्य प्रदान करते हुए समस्त वायुमण्डल को पवित्रता से ओत-प्रोत कर दिया। वैदिक परम्परा की सम्पन्नता का निर्वाह परिवार में पूर्वजों की शिक्षा के रूप में निरन्तर चला आ रहा है और उसको और अधिक पवित्रता से सम्पन्न करने का सौभाग्य माता श्रीमति शन्नो त्यागी को अपने बाबा श्री कालूराम त्यागी जी व माता-पिता श्रीमति रश्मि त्यागी एवम् गुरुवचन शास्त्री जी की छत्रछाया में धरोहर के रूप में बाल्यकाल से प्राप्त होता रहा है। विदुषी माताएँ ही श्रेष्ठ सन्तान को राष्ट्र को अर्पित करने में पुरातनकाल से अग्रणीय रही हैं।

इस पवित्र वेला के शुभागमन पर वैदिकता से सम्पन्न परिवार ने 2100 रु. का सात्विक सहयोग समिति के प्रकाशन कार्य को बल प्रदान करने के लिए अर्पित किया है। जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और सौभाग्यशाली शिशु को जन्मदिवस व नामोकरण की शुभकामनाएँ देते हुए समस्त परिवार की सुख, शान्ति, दीर्घायु एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है।

**वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

।। ओ३म् ।।

# जन्मदिन की शुभकामनाएँ

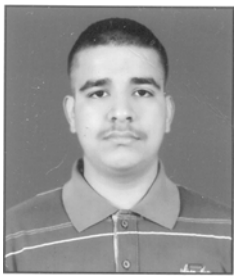

वैदिक कुमार त्यागी

श्रीमति पूनम त्यागी व श्री संजीव त्यागी जी निवास स्थान बल्लभगढ़, हरियाणा (मूल निवासी ग्राम दिनकरपुर, जिला मुजफ्फरनगर) ने अपने सुपुत्र चिरन्जीव वैदिक कुमार त्यागी के शुभ जन्मदिवस 8 मई 2021 के आगमन पर 5000 रु. का सात्त्विक सहयोग प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी उदारता से प्रदान किया है। जिससे कि ऋषि मुनियों के क्रियाकलाप को ऊर्ध्वागति प्रदान करते हुए प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में उनके आशीर्वाद की छत्र-छाया भी निरन्तर स्मरण रूप में बनी रहे। उसी धारा को निरन्तर जागृत रखते हुए अपने सेवाकाल को भी बड़ी निष्ठा व कर्मठता से करते हुए लाक्षागृह वरणावत में रक्षा बन्धन की पावन वेला पर आयोजित यज्ञ में प्रति वर्ष पति-पत्नि अपने सुपुत्र सहित यजमान बनकर और अपने जीवन में साहित्य का निरन्तर अध्ययन करते हुए अपने को परिवार सहित ऊर्ध्वागति प्रदान करने में संलग्न हैं।

प्रिय वैदिक अपने माता-पिता की छत्रछाया में बाल्यकाल से ही साप्ताहिक यज्ञ केवल गऊ घृत से सम्पन्न करते हुए प्रतिदिन प्रातःकाल में पूज्यपाद-गुरुदेव के मन्त्र पाठ व मधु शान्ति पाठ के श्रवण करने में संलग्न हैं। आपने इस वर्ष कैमिकल इन्जीनियरिंग की शिक्षा में उत्तीर्ण होकर अग्रिम शिक्षा हेतु अपने को सम्पन्न बनाने में प्रयत्नशील है।

समिति त्यागी जी के सौभाग्यशाली प्रिय पुत्र वैदिक कुमार को जन्मदिवस की शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए उज्ज्वल भविष्य के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है और समस्त परिवार का पुनः से आभार प्रकट करते हुए सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी उन्नति के लिए भी ईश्वर से प्रार्थना करती है।

**वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

।। ओ३म् ।।

# जन्मदिन की शुभकामनाएँ

रक्षित भारद्वाज

श्रीमति इन्दु भारद्वाज व श्री विपिन भारद्वाज निवासी ग्राम रई, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश ने अपने प्रिय सुपुत्र रक्षित भारद्वाज के तेइसवें जन्मदिवस, दिनाँक 7 जून, 2021 के शुभ आगमन पर प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 1100 रु. का सात्त्विक सहयोग समिति के प्रकाशन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए उदारता से प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार व्यक्त करती है।

श्री भारद्वाज जी गुड़गाँव में सेवारत हैं और वहीं पर अपने परिवार सहित अपने जीवन को अपने कार्य के साथ-साथ वैदिक परम्परा से सम्पन्न करने में प्रयत्नशील हैं। समस्त परिवार पूज्यपाद गुरुदेव से विशेष प्रभावित है और उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए यागों में अपनी आहुति प्रदान करके अपने जीवन को निरन्तर यज्ञमयी बनाने में सदैव अग्रणीय रहता है।

ऐसे श्रद्धालु एवम् याज्ञिक परिवार के द्वारा विषम परिस्थितियों में निरन्तर सहयोग का समिति पुनः से आभार प्रकट करती है और उनके सौभाग्यशाली पुत्र के जन्मदिवस पर बारम्बार शुभकामनाएँ देते हुए समस्त परिवार के लिए सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

**वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

॥ ओ३म् ॥

# वियोग

श्रीमती सुधा त्यागी

परमपिता परमात्मा के सृष्टि चक्र में आवागमन निरन्तर सक्रिय बना रहता है जिसमें कि पुनीत आत्माएँ अपने जीवन काल में समाज व राष्ट्र को अपने शुभ कर्मों से सम्पन्न बनाने में अपने प्राणों की आहुति देकर अपने लोक को गमन कर जाती हैं और संसार को सम्पन्न बनाने के लिए निरन्तर आती भी रहती हैं। इसी क्रम में एक पवित्र, विदुषी एवम् पूज्यपाद गुरुदेव के सानिध्य से सम्पन्न आत्मा श्रीमति सुधा त्यागी धर्मदेवी श्री राजपाल त्यागी जी निवासी पञ्चशील, मेरठ, मन्त्री श्री गाँधीधाम समिति लाक्षागृह वरणावत, 24 अप्रैल 2021 को अकस्मात् हम सबसे दूर अपने लोक में गमन कर गयीं। जिससे कि समस्त परिवार एवम् सम्बन्धित महानुभावों पर समय की विचित्रता का एक व्रजपात हुआ जिसको सत्य समझने में, सभी अपने में स्वीकार करने में असमर्थ पाने लगे। परन्तु सत्य, सत्य ही होता है और समय अपनी तीव्र गति से सब स्पष्ट करने में सक्रिय बना रहता है। ऐसी पुण्य आत्माएँ जोकि अपने परिवार एवम् अपनी ऊर्ध्वागति में संलग्न रहते हुए अपने सभी सगे-सम्बन्धियों व मित्रों तथा समाज को भी तन-मन-धन से समर्पित रहते हुए, एक आदर्श जीवन की रूपरेखा में निरन्तर प्रयत्नशील रहते हुए अपने पीछे एक परोक्ष भाव का अभाव छोड़कर अपने संस्कारों की ऊर्ध्वागति में आनन्द विभोर रहते हुए अकेले ही अपनी अग्रिम जीवन यात्रा में जीवन मुक्त होने के लिए गमन कर जाती हैं।

एक अत्यन्त ही श्रद्धालु, याज्ञिक, प्रेरणास्त्रोत एवम् कर्त्तव्यपारायण आत्मा का सानिध्य हमारे मध्य से चला गया है जोकि जीवन में चिरकाल तक अभाव के रूप में बना रहेगा क्योंकि संत्सग सम्पन्नता, ज्ञान व आनन्द के लिए प्रत्येक आत्मा पिपासी रहती है।

उनके अक्समात् जाने से संतृप्त परिवार के प्रति समिति के सभी सदस्य अपनी गहन संवेदना प्रगट करते हैं। और परमपिता परमात्मा से परिवार को उनकी क्षति वहन करने के लिए प्रार्थना करते हैं।

**वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

**॥ ओ३म् ॥**

## श्रद्धा-सुमन

पूज्यपाद गुरुदेव की अमृतवर्षा को यौगिक प्रवचन में इस माह प्रकाशित करने के लिए सहयोग आदरणीया श्रीमति सुमित्रा त्यागी पत्नी स्व. श्री शौराज सिंह त्यागी निवासी ग्राम मकनपुर, जिला गाजियाबाद, उ.प्र. ने अत्यन्त आत्मविभोर एवम् उदारता से पुण्य कर्मों की वेला को प्रकाशमान बनाने में 5000 रुपये की आहुति समर्पित की है। जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रगट करती है। और उनकी परमपिता परमात्मा के ज्ञान में ओत-प्रोत प्रवृत्ति की गति को आत्म-उत्थान के लिए ऊर्ध्वा में निरन्तर संलग्न रहने की कामना करते हुए उनकी दोनों सुपुत्रियों के समस्त परिवारों की सुख, शान्ति, दीर्घायु एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

॥ ओ३म् ॥

# वियोग

श्रीमती जसमन्ती देवी आर्य

वैदिक साहित्य की अनुव्रतिका और आर्य समाज रामनगर, रूड़की, हरिद्वार के पूर्व वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवम् वर्तमान में पुस्तकालय अध्यक्ष (88 वर्षीय) 60 वर्षों से लगातार आर्य समाज की सेवा में संलग्न श्री तेजपाल सिंह आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमति जसवन्ती देवी आर्य का 5 मई 2021 को 86 वर्ष की अवस्था में अकस्मात् निधन से सम्पूर्ण आर्य जगत, मनुष्य मात्र एवम् गुरुकुल लाक्षागृह के लिए अपूर्णीय क्षति है।

आर्य समाज व वैदिक संस्कारों से माता जसवन्ती आर्य जी ने अपने परिवार को अनवरत अभिसिंचित किया है। इनके दो सुपुत्र तथा एक सुपुत्री हैं। जोकि वैदिक सम्पदा से सम्पन्न हैं। आपका परिवार आपके द्वारा पल्लवित और पुष्पित संस्कारों के मार्ग का अनुवर्ती है। लाक्षागृह गुरुकुल वरणावत में चतुर्वेद पारायण यज्ञ में अपने पतिदेव के सङ्ग प्रतिवर्ष आपका जाना और एक सप्ताह तक वहाँ रहना आपकी यज्ञीययज्ञ श्रद्धा का परिचायक है। आप में एक आदर्श माता, एक आदर्श पत्नी, एक आदर्श ग्रहणी के सभी गुण विद्यमान थे। मानव मात्र के प्रति दयाभाव आपका गहना था।

श्रद्धालु एवम् याज्ञिक परिवार ने इक्कीस सौ रुपये का सहयोग प्रकाशन सहायता के लिए दिया है। जिसके लिए समिति आभार प्रगट करती है और ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवङ्गत आत्मा को शान्ति प्रदान करे और परिजनों को दारुण दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

**वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

॥ ओ३म् ॥

# वियोग

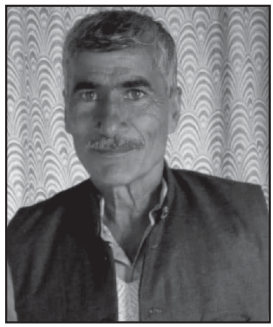

श्री रामवीर त्यागी

मृत्यु जीवन की पुनरुक्तियाँ प्रत्येक प्राणी के जीवन व अन्य सभी क्षेत्रों में स्वभाविक रूप से गतिशील हैं और प्रत्यक्ष एवम् परोक्ष रूप में अनुभव करते हुए भी मानव उसकी गम्भीरता व गहनता से प्रायः अनभिज्ञ ही बना रहता है। इसी आवागमन के क्रम में श्री रामवीर त्यागी सुपुत्र श्री ब्रह्मजीत सिंह त्यागी जी, निवासी ग्राम चमरावल, जिला बागपत, उ.प्र. 9 फरवरी 2021 को अक्समात् अपने नश्वर शरीर को त्यागकर हम सब के मध्य से दूर चले गए जिससे कि परिवार को गहन क्षति का आघात हुआ है। उसके लिए सभी अपनी वेदना प्रगट करते हैं।

श्री त्यागी जी सरल स्वभाव एवम् याज्ञिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और पूज्यपाद गुरुदेव में पूर्ण निष्ठा रखते हुए उन्होंने अपने गृह पर अनेक बार अत्यन्त श्रद्धा व नम्रता से वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञों का आयोजन कराया और लाक्षागृह वरणावत में प्रति वर्ष होने वाले सभी यागों में अपनी धर्मपत्नी श्रीमति सविता देवी के सङ्ग यजमान बनने का सुअवसर भी अनेक बार प्राप्त किया है। इसके साथ-साथ दोनों, पति-पत्नी साहित्य का अध्ययन निरन्तर करते हुए अपने को याज्ञिक बनाने में आनन्दसहित संलग्न थे। परन्तु इस अकस्मात् वियोग से जीवनधारा में गतिरोध आने से निश्चित ही कष्टमय समय से अपने को निकासने के प्रयास में परिवार को अपनी गति स्थिर बनाने में अथक परिश्रम से प्रयास में निरन्तर प्रयत्नशील बने रहना होगा।

समिति के सभी सदस्य इस संतृप्त परिवार को अपनी गहन संवेदना प्रगट करते हैं और परमपिता परमात्मा से उनकी क्षति को वहन करने की शक्ति समस्त परिवार को प्रदान करने के लिए प्रार्थना करते हैं।

**वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

# यौगिक प्रवचन के स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (नियम नं. 8)

| | | |
|---|---|---|
| 1. | प्रकाशन स्थान | : दिल्ली |
| 2. | प्रकाशन अवधि | : मासिक |
| 3. | मुद्रक | : डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश |
| | नागरिकता | : भारतीय |
| | मुद्रक का पता | : डी-33, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017 |
| 4. | प्रकाशक | : डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश |
| | नागरिकता | : भारतीय |
| | प्रकाशक का पता | : डी-33, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017 |
| 5. | सम्पादक का नाम | : डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश |
| | नागरिकता | : भारतीय |
| | सम्पादक का पता | : डी-33, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017 |
| 6. | उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों। | : वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) |

मैं डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

**डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश**
प्रकाशक के हस्ताक्षर

**वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**
सी-38, शिवालिक, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017

## योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

| | | |
|---|---|---|
| *1. | यौगिक प्रवचन माला (भाग 1) | 110.00 |
| *2. | यौगिक प्रवचन माला (भाग 2) | 110.00 |
| *3. | यौगिक प्रवचन माला (भाग 3) | 120.00 |
| *4. | यौगिक प्रवचन माला (भाग 4) | 120.00 |
| 5. | यौगिक प्रवचन माला (भाग 5) | 160.00 |
| 6. | Yogic Wisdom of Ancient Rishis | 100.00 |
| 7. | वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान | 40.00 |
| 8. | आत्म-लोक | 45.00 |
| *9. | धर्म का मर्म | 50.00 |
| 10. | शंका-निवारण | 40.00 |
| 11. | यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व | 50.00 |
| 12. | आत्मा व योग-साधना | 40.00 |
| *13. | देवपूजा | 50.00 |
| 14. | अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1) | 150.00 |
| 15. | अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2) | 150.00 |
| 16. | अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3) | 140.00 |
| 17. | रामायण के रहस्य | 50.00 |
| 18. | यज्ञ एवं औषधि विज्ञान | 50.00 |
| 19. | महाभारत के रहस्य | 35.00 |
| 20. | अलङ्कार-व्याख्या | 45.00 |
| 21. | रावण-इतिहास | 65.00 |
| 22. | महाराजा-रघु का याग | 35.00 |
| 23. | वनस्पति से दीर्घ-आयु | 40.00 |
| 24. | मोक्ष प्राप्ति का मार्ग | 40.00 |
| 25. | चित्त की वृत्तियों का निरोध | 50.00 |
| 26. | आत्मा, प्राण और योग | 40.00 |
| 27. | पञ्च-महायज्ञ | 45.00 |
| 28. | अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त | 50.00 |
| 29. | याग-मन्जूषा | 45.00 |
| 30. | आत्म-दर्शन | 35.00 |
| 31. | पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन | 40.00 |
| 32. | याग और तपस्या | 70.00 |
| 33. | यागमयी-साधना | 45.00 |
| 34. | यागमयी-सृष्टि | 40.00 |
| 35. | याग-चयन | 50.00 |
| 36. | दिव्य-रामकथा | 150.00 |
| 37. | ज्ञान-कर्म-उपासना | 50.00 |
| 38. | दिव्य-ज्ञान | 45.00 |
| 39. | महाभारत एक दिव्य दृष्टि | 140.00 |
| 40. | महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग | 50.00 |
| 41. | आत्म-उत्थान | 45.00 |
| *42. | तप का महत्त्व | 50.00 |
| 43. | अध्यात्मवाद | 45.00 |
| 44. | ब्रह्मविज्ञान | 45.00 |
| 45. | वैदिक-प्रभा | 40.00 |
| 46. | प्रकाश की ओर | 40.00 |
| 47. | कर्तव्य में राष्ट्र | 45.00 |
| 48. | वैदिक-विज्ञान | 40.00 |
| 49. | धर्म से जीवन | 40.00 |
| 50. | आत्मा का भोजन | 45.00 |
| 51. | साधना | 40.00 |
| 52. | त्रेताकालीन-विज्ञान | 45.00 |
| 53. | यज्ञोमयी-विष्णु | 45.00 |
| 54. | यौगिक प्रवचन माला भाग-6 | 110.00 |
| 55. | स्वर्ग का मार्ग | 50.00 |
| *56. | यौगिक प्रवचन माला भाग-7 | 110.00 |
| 57. | माता मदालसा | 60.00 |
| *58. | यौगिक प्रवचन माला भाग-8 | 110.00 |
| *59. | यौगिक प्रवचन माला भाग-9 | 110.00 |
| 60. | यौगिक प्रवचन माला भाग-10 | 110.00 |
| 61. | याग एक सर्वाङ्ग पूजा | 110.00 |
| 62. | यौगिक प्रवचन माला भाग-11 | 150.00 |
| *63. | यौगिक प्रवचन माला भाग-12 | 110.00 |
| 64. | मानव कल्याण की चर्चाएँ | 60.00 |
| 65. | प्रभु-दर्शन | 60.00 |
| *66. | यौगिक प्रवचन माला भाग-13 | 110.00 |
| *67. | समाज उत्थान का मार्ग | 60.00 |
| *68. | यौगिक प्रवचन माला भाग-14 | 110.00 |
| *69. | ब्रह्म की ओर | 60.00 |
| *70. | ईश्वर मिलन | 60.00 |
| *71. | यौगिक प्रवचन माला भाग-15 | 110.00 |
| *72. | यौगिक प्रवचन माला भाग-16 | 110.00 |
| *73. | नैतिक शिक्षा | 60.00 |
| *74. | यौगिक प्रवचन माला भाग-17 | 110.00 |
| *75. | आत्मिक ज्ञान | 60.00 |
| *76. | यौगिक प्रवचन माला भाग-18 | 120.00 |
| *77. | यज्ञ विज्ञान | 100.00 |
| *78. | यौगिक प्रवचन माला भाग-19 | 120.00 |
| 79. | मानव दर्शन | 150.00 |
| | पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह | 10.00 |

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

# पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09897695391
2. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294, मोबाइल नं. 9810887207
3. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पँचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
4. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
5. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)।
6. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
7. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
8. आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री, मं.न. 209 ग्रीन हाईटस A to Z रूड़की रोड़, मोदीपुरम्, मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09411823200
9. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पँचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
10. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
11. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
12. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
13. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
14. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
15. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

# मासिक सहयोग

| | |
|---|---|
| सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– | |
| स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल | 1001 रुपये |
| श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा | 1000 रुपये |
| श्री ज्ञानेश द्विवेदी | 1000 रुपये |
| श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा | 501 रुपये |
| श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली | 501 रुपये |
| श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली | 501 रुपये |
| श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश | 500 रुपये |
| श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा | 500 रुपये |
| श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद | 500 रुपये |
| श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली | 251 रुपये |
| श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली | 251 रुपये |
| मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा | 251 रुपये |
| मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा | 251 रुपये |
| डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात | 250 रुपये |
| श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल | 201 रुपये |
| मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश | 101 रुपये |
| मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली | 101 रुपये |
| कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश | 101 रुपये |
| मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली | 101 रुपये |
| मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका | 101 रुपये |
| कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका | 101 रुपये |
| मास्टर कबीर मल्हौत्रा, ब्रज विहार, गाजियाबाद | 101 रुपये |
| कुमारी रिधानी मल्हौत्रा, ब्रज विहार, गाजियाबाद | 101 रुपये |
| कुमारी सृष्टा, पश्चिम एन्कलेव, नई दिल्ली | 101 रुपये |
| मास्टर अव्युक्त, पश्चिम एन्कलेव, नई दिल्ली | 101 रुपये |

## मासिक सहयोग का आह्वान

आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है कि मासिक सहयोग की राशि समय पर प्रेषित करने का सहयोग करें। जिससे प्रकाशन निरन्तर ऊर्ध्वागति को प्राप्त होता रहें। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

**योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज**

# उद्‌बोधन

हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए यज्ञशाला में परणित होते हुए अपने विचारों का यज्ञ करते चले जाएँ। नाना-नाना प्रकार का संकल्प के साथ में हमारा एक मानसिक संकल्प हो, प्राण का ही उसमें निदान हो, उसके पश्चात् जब हम उसमें आहुति देते हैं तो वह आहुति द्यौ लोक को प्राप्त होती है। देवतागण उसको प्राप्त करते हैं और देवता जब तृप्त होते हैं तो राष्ट्रवाद को क्या, समाज को पवित्र बनाते चले जाते हैं। परमाणुवाद को ऊँचा बनाते चले जाते हैं। क्योंकि यह जितना जगत है यह सब परमाणुओं की ही रचना है। द्यौ लोक का जो घृत है उसमें कितने सूक्ष्म परमाणु होते हैं, और वह परमाणु जब अग्नि-उद्‌गाता बन करके और वायु अध्वर्यु बन करके जब उसका साकल्य उसमें प्रदान किया जाता है तो द्यौ लोक में कितनी महान् गति होती है, कितना मानव का हृदय स्वच्छ और पवित्र होता है, ममता से रहित होता है, नाना प्रकार की विडम्बनाओं से रहित होता है उतना ही द्यौ लोक को मानव का सङ्कलन प्राप्त होता चला जाता है।

**पूज्यपाद-गुरुदेव**

वर्ष 49 : अंक : 580
जुलाई 2021

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-07-2021
**Published on 5th day of the same month**